# "तुलसीदास की भक्ति भावना"

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि हैं गोस्वामी तुलसीदास। वे अपनी समस्त रचनाओं में राम के प्रति अनन्य भक्ति भाव व्यक्त किया है, इसलिए उन्हें राम का एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा जाता है। उनकी भक्ति-भावना में श्रद्धा एवं विश्वास का समन्वय देखने को मिलता है। वे चातक को अपने प्रेम और भक्ति का परम आदर्श माना है और अपने आराध्य राम के प्रति अनन्य प्रेम, अटूट श्रद्धा, परम विश्वास एवं प्रीति प्रकट करते हुए अपनी भक्ति भावना को प्रकट किया है —

"एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास॥"

अपने आराध्य देव राम के प्रति तुलसीदास के मन में अनन्य प्रेम, श्रद्धा, विश्वास व्याप्त है। श्रद्धा एवं विश्वास ही तुलसीदास की भक्ति का आधार है। तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की है। वे अपने आराध्य राम के प्रति पूर्ण रूप से अपने को समर्पित कर देते हैं और राम को अपना स्वामी एवं अपने को राम का सेवक मानते हैं। वे स्पष्ट घोषणा करते हैं कि सेवक-सेव्य भक्ति के बिना कोई भी इस संसार रूपी सागर से पार नहीं जा सकता है —

"सेवक-सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।"

निश्चय ही एक अनन्य भक्त के लिए अपने आराध्य से बढ़कर महान एवं सर्वगुण सम्पन्न दूसरा कोई नहीं हो सकता है। इसी कारण तुलसीदास ने अपने आराध्य राम के साथ अपने

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

अनेक सम्बन्ध माना है। इसकी वे स्पष्ट घोषणा करते हुए कहते हैं—

"ब्रह्म तू है जीव हौं तू ठाकुर हौं चेरो।
तात-मात गुरु सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥"

तुलसीदास अपने इष्टदेव राम को महान् और स्वयं को तुच्छ, छोटा एवं खोटा मानते हैं। वे राम से 'आत्म निवेदन' की प्रवृत्ति में कहते हैं—

"राम सों बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन मोसो कौन खोटो?"

तुलसीदास की भक्ति भावना में 'नवधा भक्ति' का पूर्ण स्वरूप देखने को मिलता है। नवधा भक्ति के अन्तर्गत श्रवण, कीर्तन, पाद सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सख्य, नाम स्मरण और आत्म निवेदन आते हैं। वे राम नाम की महिमा का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं—

"राम जपु राम जपु राम जपु बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे॥"

तुलसीदास ने अपने आराध्य देव राम को अनेक नामों से पुकारा है, जिनमें ब्रह्म, सच्चिदानन्द, परमात्मा, रघुवर, रघुवंशमणि, इन्दिरापति, रमारमन, श्रीरमण, सीतापति, हरि, विष्णु, गोविन्द आदि प्रसिद्ध हैं। तुलसी के राम शक्ति, शील एवं सौन्दर्य के भण्डार हैं। वे सम्पूर्ण जगत के स्वामी हैं। तुलसीदास की भक्ति में विनय की सभी सात भूमिकाओं— दैन्य, मानमर्षता, भयदर्शना, भर्त्सना, आश्वासन, मनोराज्य एवं विचारणा का समावेश है। दैन्य नामक भूमिका में भक्त स्वयं को तुच्छ एवं अपने आराध्य को महान् मानते हुए वह अपने आराध्य से प्रार्थना करता है कि वे अपने भक्त को अपनी शरण में ले लें। मानमर्षता की भूमिका वहाँ होती है, जहाँ भक्त अपने अभिमान (अहं) को त्यागकर अपने

आराध्य के समीप जाने का निश्चय करता है। जीव को भय दिखाकर आराध्य की शरण में जाने के लिए प्रेरित करना भयदर्शना नामक भूमिका है। जैसे—

"राम कहत चलु राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे।
नाहिं तो भव बेगार में परिहै छूटत अति कठिनाई रे॥"

जब भक्त द्वारा मन को डाँट-डपटकर सही मार्ग पर लाने का प्रयास किया जाता है, तब भर्त्सना नामक भूमिका होती है—

"ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि राम भगति सुर सरिता आस करत ओसकन की॥"

तुलसीदास अपने आराध्य देव के गुणों पर विश्वास करते हुए अपने मन को जहाँ आश्वस्त करते हुए दिखाई पड़ते हैं वहाँ 'आश्वासन' नामक भूमिका है। तथा जहाँ मन की कामनाओं की अभिव्यक्ति है वहाँ मनोराज्य नामक भूमिका दिखाई देती है—

"कबहुंकि हौं यह रहनि रहौंगो?
श्री रघुनाथ कृपालु कृपा तें संत स्वभाव गहौंगो।
जथा लाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।"

संसार के माया जाल की जटिलता दिखाकर संसार से विरक्त होकर जब कोई भक्त भक्ति भावना में लीन दिखाया जाता है, तब वहाँ विचारणा नामक भूमिका होती है। तुलसीदास कृत 'विनय-पत्रिका' के निम्न पद में इस भूमिका को देखा जा सकता है—"केसव कहि न जाइ का कहिए
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिए"

तुलसीदास ने अपने आराध्य राम के सामर्थ्य, प्रभुत्व एवं महानता का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। सगुणोपासक मोक्ष प्राप्ति की कामना नहीं करते, बल्कि वे तो प्रभु से भक्ति की भावना करते हैं। संसार में उन्हें और कुछ नहीं चाहिए एकमात्र भक्ति ही उनका प्राप्य है—

"अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहौं निरबान
जनम-जनम रति राम पद यह वरदान न आन ॥"

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भक्ति की प्राप्ति के लिए सत्संग को महत्व देते हुए कहा है—

"बिनु सतसंग विवेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥"

अर्थात् बिना सत्संग विवेक नहीं होता और बिना विवेक के जाग्रत हुए भक्ति सम्भव नहीं है, और यह सत्संग राम की कृपा से ही सुलभ हो पाता है। ज्ञान और वैराग्य को तुलसीदास भक्ति का साधन मानते हैं। तुलसीदास की भक्ति भावना के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं, "गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है- उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती है। सब पक्षों के साथ उसका सामन्जस्य है। न उसका कर्म या धर्म से विरोध है, न ज्ञान से। धर्म तो उसका नित्य लक्षण है। तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते हैं।"

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि तुलसीदास अप्रतिम भक्त कवि हैं। उन्हें अपने आराध्य देव राम की शक्ति एवं सामर्थ्य पर पूरा विश्वास है। वे राम के प्रति अटल श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं। वे संसार को त्यागकर राम की शरण में जाने के लिए मन को बार-बार समझाते हैं। तुलसीदास की भक्ति में अपने आराध्य राम के प्रति अनन्यता दिखाई पड़ती है। अर्थात् वे सच्चे अर्थों में राम के परम भक्त कहे जा सकते हैं।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास